पुस्तक समीक्षा

भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा
8(2) 253–254, 2021
© 2020 Indian Sociological Society
Reprints and permissions:
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/2349139621101755 9
http://bss.sagepub.in

रमन जहानबेगलू (2021), *इन परसूट ऑफ अनहैप्पीनेस: रेफ़्लेक्शन्स ऑन सुसाइड*, पृष्ट 96, मूल्य ₹255.00 (पेपरबैक), हैदराबाद: ओरिएंट ब्लैकस्वान, ISBN: 978-81-948295-7-7

हम सेनेका या मिशिमा के समय में नहीं रह रहे हैं। हमारी दुनिया में आत्महत्या आम बात हो गई है। कोई भी नैतिक साया आत्महत्या को कम नहीं कर पाता है। अपने आप को मारना न तो कोई पाप और न ही कोई रोगात्मक स्थिति मानी जाती है। सामाजिक, आर्थिक या मनोवैज्ञानिक कारक व्यक्ति के आत्महत्या करने के निर्णय को सुदृढ़ कर सकते हैं, लेकिन अंतिम निर्णय तो व्यक्ति के पास ही रहता है।

आत्महत्या की धारणा मानव सभ्यता जितनी ही पुरानी है। यदि हम अपनी दुनिया में खुशी की अवधारणा की समीक्षा करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जैसा आशीस नंदी ने कहा है, 'पूरी खुशी तब मिलती है जब कोई व्यक्ति एक-एक करके सब अप्रसन्नताओं को खत्म कर देता है। यह कोई आसान काम नहीं है ....'। समकालीन समाज में विकसित मनोविज्ञान के अनुसार आत्महत्या खुशी की अवहेलना और अवज्ञा का क्षण है। आज की दुनिया में खुश नहीं होने का अर्थ है हाशिए पर होना, अनुपयुक्त या फिर विघटनकारी होना। महान मूल्यों को बनाए रखने के लिए या किसी की विचारधारा और विश्वासों के लिए खुद को मारना, आज की दुनिया में वीरतापूर्ण कार्य नहीं माना जाता है।

दुर्खीम के अनुसार आदर्शहीन (Anomic) आत्महत्या ने आधुनिक समाजों में कुछ गड़बड़ियों को रेखांकित किया है, जो व्यक्तियों को बहुत अधिक आशा की ओर ले जाती है जबकि अहंवादी (Egoistic) आत्महत्या सामाजिक एकीकरण की कमी का प्रत्यक्ष परिणाम है। दुर्खीम के अनुसार यही कारण है कि कैथोलिकों की तुलना में अधिक प्रोटेस्टेंटों ने आत्महत्या की, क्योंकि उनके विश्वास के अनुसार समुदाय की तुलना में व्यक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। उन्होंने 'आत्महत्या: समाजशास्त्र में एक अध्ययन' नामक अपनी पुस्तक में यह निष्कर्ष निकाला कि 'व्यक्ति जिन सामाजिक समूहों का भाग होता है उनमें उसके एकीकरण की डिग्री के विपरीत आत्महत्या होती है। हम आत्महत्या को जीवन के लिए एक व्यक्ति के चरम घृणा और मानवता के लिए एक आक्रोश के रूप में देखते हैं' (जैसा कि कांत ने भी कहा है)।

आज की दुनिया में खुशी और भलाई अक्सर राज्य द्वारा या सामूहिक संस्कृति और उथले और उपभोक्तावादी होने के झूठे अहसास द्वारा तय किए जाते हैं। खुशी न होने का पारिभाषिक अर्थ है हाशिए पर, बेमेल तथा मतविरोधी होना। ऐसी दुनिया में, अप्रसन्नता उन लोगों के लिए एक ऐसी निषिद्ध स्थिति बन जाती है जिसे सामूहिक आदर्शात्मक अनुपालना के प्रति असंतोष और माध्यमता की तृप्ति माना

जाता है। प्रसिद्ध दार्शनिक रमन जहानबेगलो कहते हैं कि अप्रसन्नता की खोज जीवन की समग्रता का सामना करती है और सत्य का वैकल्पिक क्षितिज प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक हमें खुशी के अर्थ की बारीकी से जांच करने के लिए प्रेरित करती है।

समीक्षाधीन पुस्तक में कुल छह अध्याय हैं : 1. परिचय: आत्महत्या क्यों? 2. दार्शनिक आत्महत्याएं 3. आत्महत्या और आधुनिकता 4. कविता और आत्महत्या 5. आत्महत्या का सौंदर्यप्रबोध: युकिओ मिशिमा 6. निष्कर्ष: असंतोष की खोज। इन अध्यायों में यह वर्णन किया गया है कि जीवन अपने लिए पूरी तरह से जीने योग्य एक सुंदर साहसिक कार्य है, लेकिन जीवन दर्द भरा एक ऐसा क़ैदखाना है जिसका कोई निकास द्वार नहीं होता। आत्महत्या, निराशा या जीवन से घृणा का कार्य होने के बजाय, मानव स्वतंत्रता का परम कार्य है, जिसके द्वारा व्यक्तियों ने दिखाया है कि वे अपने भाग्य को नियंत्रित करते हैं, और सत्ता के अत्याचार का विरोध करते हैं फिर भले ही वह समाज या राज्य ही क्यों न हों। यह स्वतंत्रता उन लोगों की है जो जाँच-परख कर जीवन जीते हैं तथा अधिकारहीनता, उपेक्षा, ईमानदारी तथा स्वायतता को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। आत्महत्या बिना भगवान के और आशाविहीन एक हिंसक, उदासीन दुनिया में, अर्थहीनता और अनैतिकता की एक विधा से पीड़ित मृत्यु के भय से मुक्ति देती है, जैसा कि मांटगने (Montaigne) ने कहा है, 'अन्य जीवन की उत्पत्ति' का आरंभ है।

वैश्वीकरण के वर्तमान युग में उम्मीदों और सम्मान को प्राप्त करने की चाहत में मानवजीवन अनकही पीड़ा और दुखभरी कहानी बन गया है। प्रत्येक मनुष्य यह जानता है कि सामान्य रूप से जीवन, और विशेष रूप से व्यक्ति का जीवन, इतनी अधिक उपलब्धियों वाला नहीं होता है क्योंकि इसमें अंतहीन इच्छाओं के बढ़ने की संभावना रहती है। हम वर्तमान के बारे में कभी नहीं सोचते कि आज कैसे आनंद लें लेकिन भविष्य के लिए योजना बनाते रहते हैं। इस प्रकार, हम वास्तव में कभी नहीं जीते हैं, लेकिन जीने की आशा करते हैं। हम हमेशा खुश रहने की योजना बनाते रहते हैं जबकि हमें योजनाएँ बनाने के वजाए वर्तमान में खुश रहने के तरीके ढूँढने चाहिए। यही बात ब्लेज़ पास्कल (Blaise Pascal) ने 'मानवीय खुशी' (Human Happiness) नामक अपनी पुस्तक में भी कही है।

'असंतोष की खोज में' नामक पुस्तक में मानव जाति का एक आध्यात्मिक आयाम है, फिर आत्महत्या एक उदासीन दुनिया के घमंड को पार करने और हमारी मानवता की पुन: पुष्टि करने का एक संभावित तरीका है। रमन जहानबेगलो ने आधुनिकता के संदर्भ में दार्शनिक रूप से व्याख्या करते हुए सौंदर्यशास्त्र संबंधी सुंदर कथाएँ प्रस्तुत की हैं। यह पुस्तक समकालीन समाज में विशेष रूप से उन सभी व्यक्तियों के लिए रुचिकर और प्रासंगिक है जो अपेक्षाओं, सम्मान और पहचान से डरते हैं और दूसरों के जीवन की जटिलताओं से सीख लेकर, निराशा व घृणा को छोड़कर सादा जीवन अपनाते हैं।

सुजीत कुमार सरोच
प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग
एस.सी.वी.बी. गवर्नमेंट पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज
पालमपुर, हिमाचल प्रदेश
ई-मेल: sujitsurroch@gmail.com